गुढीपाडवा के बारे में जानें

अलका जैन द्वारा लिखित

बुधवार, २२ मार्च, २०२३

वसन्त ऋतु के आगमन पर नवीन कोंपले फूटने व असंख्य कलियों के खिलने से पूरा संसार उनके रंगों व उनकी सुगन्ध से सराबोर हो जाता है, धरती माँ तो अपने पुनर्जीवन का उत्सव ही मना रही होती है। भारत में महाराष्ट्र, गोआ, कर्नाटक और केरल के हिन्दूजन, वसन्त ऋतु का उत्सव गुढीपाडवा पर्व के साथ मनाते हैं। यह पर्व भारतीय पंचांग के अनुसार चैत्र माह के शुक्लपक्ष के 'पाडवा' यानी प्रथम तिथि को मनाया जाता है। 'गुढी' का अर्थ है, 'विजयपताका।' गुढीपाडवा के दिन से चैत्र नवरात्रि का आरम्भ भी होता है जो देवी दुर्गा के सम्मान में मनाया जाने वाला नौ दिवसीय महोत्सव है।

ब्रह्मपुराण के अनुसार, प्राचीन काल में आए एक महाप्रलय ने सम्पूर्ण सृष्टि को नष्ट कर दिया था और समय मानो थम ही गया था। उस समय देवी दुर्गा ने, ब्रह्मदेव से सृष्टि के पुनर्निर्माण का आग्रह किया। इसी कारण, गुढीपाडवा के दिन ब्रह्मा जी की पूजा की जाती है और 'गुढी' को 'ब्रह्मध्वज' भी कहा जाता है। गुढीपाडवा को उस दिन के रूप में भी मनाया जाता है जब भगवान श्रीराम लंका में राक्षस रावण पर विजय प्राप्त करके पुनः अपने राज्य अयोध्या लौटे थे। अतः अन्य कई त्यौहारों की भाँति गुढीपाडवा को भी बुराई पर अच्छाई की विजय के रूप में मनाया जाता है और यह पर्व हमें हमारे अपने विवेक द्वारा अच्छे व बुरे के बीच के भेद को पहचानने का मधुर स्मरण कराता है।

मैं भारत के दिल्ली शहर में पली-बढ़ी हूँ और हालाँकि मेरा परिवार गुढीपाडवा नहीं मनाता, परन्तु मेरे अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले मित्र व पड़ोसी भारत के विभिन्न राज्यों से थे जो इस विशेष दिन को गुढीपाडवा, उगादी, युगादी, बैसाखी व नवरेह के रूप में मनाते थे। इस पर्व को मनाने के सभी स्थानों के तरीक़ों में थोड़ा अन्तर अवश्य होता परन्तु इनमें जो समानता थी, वह थी—वसन्तऋतु, पुनर्जनन या पुनर्नवीनीकरण, उत्साह, प्रत्याशा व उल्लास से भरा महोत्सव।

गुढीपाडवा वह समय भी है जब अनाज व फलों की फसल की कटाई होती है, यह बहु-प्रतीक्षित आम की फसल का भी समय है, और साथ ही नए बीजों की बुआई भी आरम्भ हो जाती है, अतः यह नवीन आरम्भों का समय है। नवीन आरम्भों पर इस प्रकार केन्द्रण करना, मेरे लिए उस समय एक विशेष अर्थ लेकर आया जब वर्ष १९८९ में मैंने सिद्धयोग पथ का अनुसरण करना आरम्भ किया

था। अब मैं, इस दिन को श्रीगुरु व साधना के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः नवीन करके मनाती हूँ, तथा मुझे प्राप्त हरेक वस्तु के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु मौन रूप से प्रार्थना करती हूँ एवं आने वाले नववर्ष के लिए आशीर्वादों के लिए भी प्रार्थना करती हूँ। मैं इस समय में सदैव उत्साह एवं उमंग की तरंगों को महसूस करती हूँ, जब प्रकृति स्वयं को प्रकट कर रही होती है और हमें याद दिला रही होती है कि वह स्वयं परम चिति ही है जिसकी भव्यता सभी में झलक रही है।

पारम्परिक रूप से गुढीपाडवा से कुछ दिन पूर्व लोग अपने घरों की साफ़-सफ़ाई करना व उन्हें सजाना शुरू करते हैं। जब मैं छोटी थी, अपने पड़ोसियों को रंग-बिरंगी रंगोलियों से अपने घरों को सजाते हुए देखती जो कि माता प्रकृति को प्रतिबिम्बित करता, ऐसा प्रतीत होता कि माता प्रकृति ने नवीन पत्तों व रंगीन पल्लवित कलियों द्वारा अपनी ही एक रंगोली बनाई हो। पर्व के इस समय ऐसा लगता है कि धरती माँ अपनी खुशी को छिपा न पा रही हो, इसलिए इस प्राकृतिक रूप में उनका आनन्द प्रस्फुटित हो रहा हो। एक सिद्धयोगी के रूप में, अब मेरी समझ यह है कि यह समय केवल बाहरी स्वच्छता का नहीं है, बल्कि स्वयं अपने हृदय को स्वच्छ करने व अपनी आत्मा के प्रकाश को बाहर चमचमाने देने का समय भी है।

गुढीपाडवा के दिन, सुबह से ही हमारे पड़ोसियों के घरों में हलचल शुरू होने लगती। परिवार के लोग सूर्योदय से पूर्व उठते व तत्पश्चात् अभ्यंगस्नान कर नए वस्त्र पहनते। कुछ घरों में तो सूर्योदय के समय परिवार के सदस्य अपनी आँखें बन्द रखते हुए पूजास्थल में प्रवेश करते तथा पूजावेदी के समक्ष आकर ही वे अपनी आँखें खोलते ताकि वे नववर्ष के दिन का शुभारम्भ सर्वप्रथम भगवान के दर्शन द्वारा कर सकें। अपने पड़ोसियों सहित सभी को कड़वे नीम की पत्तियों व गुड़ से बना प्रसाद मिले बिना, पूजा व प्रार्थनाएँ सम्पन्न नहीं मानी जाती थीं। कर्नाटक के मेरे कुछ मित्रों के घरों में इस कड़वे व मीठे प्रसाद में कुछ तीखी, खट्टी, नमकीन व कसैली सामग्री भी मिलाई जाती। यह मिश्रण हमें जीवन के विभिन्न रसों का स्मरण कराता है। यह विरोधाभास हमेशा हमें प्रोत्साहित करता है कि हम सदैव अन्तर में आत्मा की ओर मुड़ें जो अपरिवर्तनशील है और अशान्त मन को ध्यान व चिन्तन-मनन द्वारा शान्त करें।

महाराष्ट्र में, इस पर्व का सबसे मंगलमय भाग है, गुढीपाडवा की पूर्वसन्ध्या पर 'गुढी' को तैयार करना व उसकी स्थापना करना। इस ध्वज को घर के बाहर या छत पर स्थापित किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि लाल, हरे या पीले रंग के ध्वज के ठीक ऊपर उलटा रखा जाने वाला कलश, दिव्य ऊर्जा को सोखकर उसे घर के भीतर ले आता है। यह भी माना जाता है कि गुढी बुराइयों को दूर कर सद्भाग्य व समृद्धि लाती है। चूँकि यह विजय का पर्व है, यह हमें अपने अन्तर के शत्रुओं व हमारी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। यह हमें सिखाता है कि हम सर्वोच्च

प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहें, और सिद्धयोग पथ पर हमारा यह विश्वास है कि वह सर्वोच्च प्राप्ति है, अपनी अन्तरात्मा का ज्ञान।

और हाँ, बिना पकवानों के कोई भी महोत्सव पूर्ण नहीं होता। पकवानों का भोग, सर्वप्रथम भगवान को लगाया जाता है और फिर सब उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। लोग इकट्ठा होकर बड़े धूमधाम से शोभायात्रा निकालते हैं और मन्दिर जाते हैं। सर्वत्र आनन्द ही आनन्द होता है, जब महाराष्ट्र में लोग एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं, "गुढीपाडव्याच्या हार्दिक शुभेच्छा!"— "गुढीपाडवा की हार्दिक शुभकामनाएँ।"

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।